सर्पदंश

भारतीय वन्यजीव संस्थान

वर्ष 1982 में स्थापित, भारतीय वन्यजीव संस्थान ;डब्ल्यू आई आईद्ध पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान है। इसका मिशन, वन्यजीव विज्ञान के विकास को परिपष्ट करना और क्षेत्र में उसके अनुप्रयोग को इस तरह से प्रोन्नत करना है, जो हमारे आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण के अनुरूप हो। संस्थान का शासनादेश, वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में प्रशिक्षण, शिक्षण और अनुसंधान के माध्यम से क्षमता का निर्माण करना है, और केंद्रीय और राज्य सरकारों को तकनीकी और सलाहकार सेवाएं प्रदान करना है। संस्थान को एशिया-प्रशांत क्षेत्र में प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थलो के प्रबंधकों को प्रशिक्षण देने के लिए यूनेस्को के श्रेणी २ केंद्र के रूप में मान्यता दी गई है। संस्थान के सर्वोच्च निकाय, भारतीय वन्यजीव संस्थान- सोसाइटी की अध्यक्षता माननीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री करते हैं। संस्थान की कार्यकारी शाखा, शासी निकाय है, जिसके अध्यक्ष, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सचिव हैं।

हमारा ध्येय

वन्यजीव विज्ञान के विकास को परिपुष्ट करना तथा क्षेत्र में उसके अनुप्रयोग को इस तरह से प्रोन्नत करना, जो हमारे आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण के अनुरूप हो।

टीम लीडर
डॉ. बितापी सी. सिन्हा

पाठ संकलन
डॉ. बितापी सी. सिन्हा, डिम्पी पटेल, तानिया त्रिवेदी

सम्पादक
निधि सिंह, सोनू, अंजली कठैत, तन्वी

मानचित्र क्रेडिट
तन्वी

डिजाइन, लेआउट व चित्रण
कशिश शेरड़िया

फोटो क्रेडिट
डॉ. अभिजीत दास

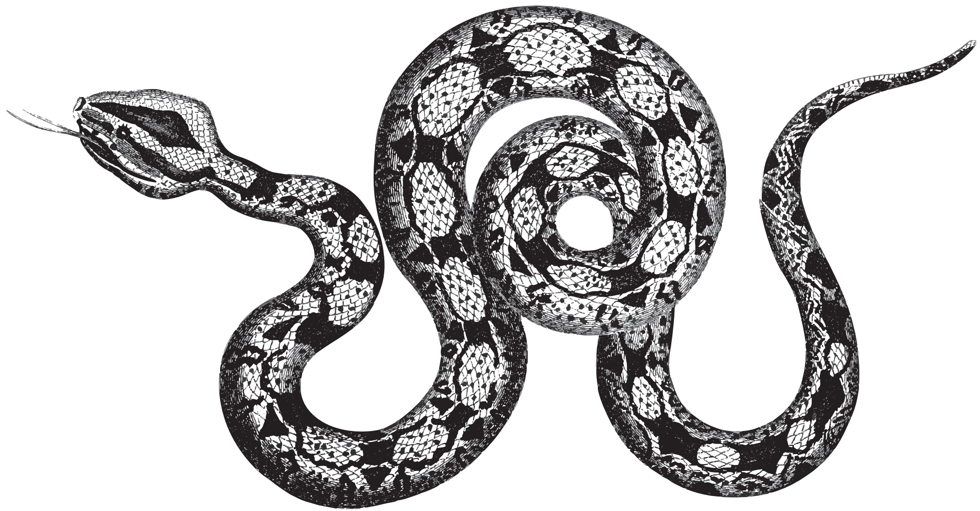

सर्पदंश

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

सर्पदंश

सर्पदंश आधुनिक भारत में आकस्मिक मृत्यु का एक महत्वपूर्ण कारण है। वैश्विक सर्पदंश के अंकों में भारत में होने वाले सर्पदंश का एक बड़ा हिस्सा है। सामुदायिक जागरूकता, उचित चिकित्सा, उचित प्रषिक्षण और एंटी-वेनम का बेहतर वितरण भारत में सर्पदंश से होने वाली मौतों को कम कर सकता है।

डब्ल्यू. एच. ओ (World Health Organization) का अनुमान है कि

दुनिया भर में हर साल 81,000 से 1,38,000 लोग सर्पदंश से मारे जाते है।

भारत में साँप के काटने से मरने वाले लोगो की संख्या दुनिया में सबसे अधिक है।

सही समय पर इलाज न होने के कारण मरने वालों की संख्या गांवों में ज़्यादा है। यही नहीं, सर्पदंश के खतरे के लिए जागरूकता न होने के कारण ये लोग कपड़े को कस के बांधना, घाव को काटना, खून चूसना, झाड़ फूक इत्यादि जैसी जानलेवा और निरर्थक प्रव्रत्तियों का प्रयोग करते है।

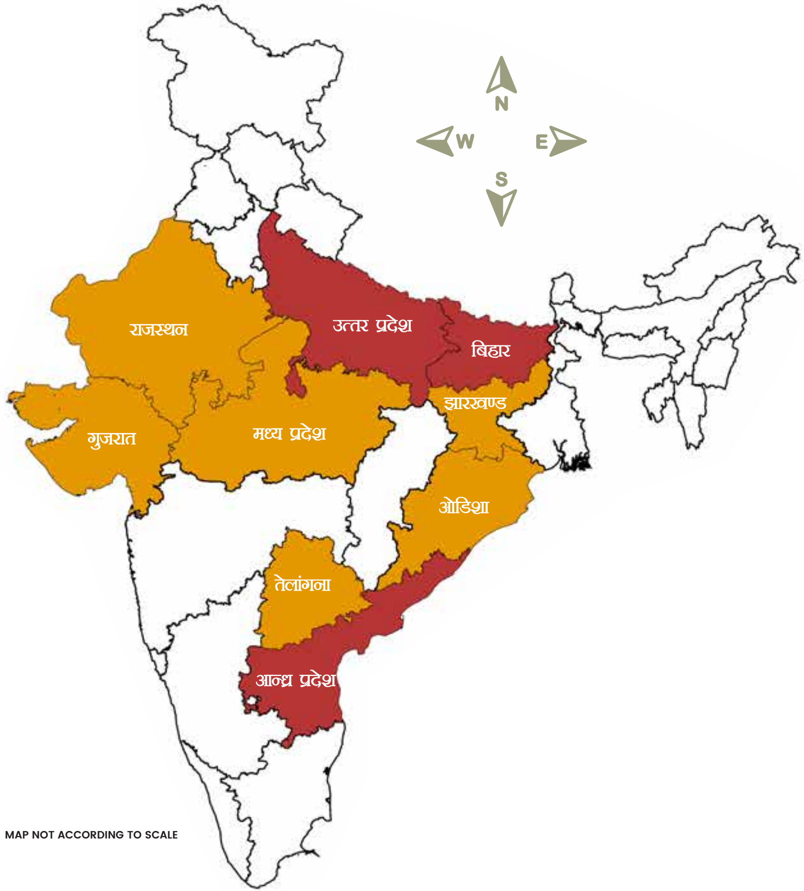

- भारत में 2011 से 2019 तक सर्पदंश के कारण 12 लाख मौतें दर्ज की गई अर्थात औसतन 58,000 मौतें।

- लगभग 70% मौतें निम्नलिखित राज्यों के कम ऊंचाई वाले, ग्रामीण क्षेत्रों में हुई- बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, उत्तरप्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान और गुजरात।

- उत्तरप्रदेश, आंध्र प्रदेश और बिहार राज्यों में वार्षिक सर्पदंश से होने वाली मौतों की संख्या सबसे अधिक थी।

SOURCE: CENTER FOR GLOBAL HEALTH RESEARCH (CGHR)

भारत में पाए जाने वाले सर्प

भारत में साँपों की करीब 306 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से 85 प्रजातियाँ ज़हरीली हैं। लेकिन इन सब में से सिर्फ 4 तरह के साँप कोबरा, रसेल्स वाईपर, सॉ-स्केल्ड वाईपर और करैत सबसे खतरनाक हैं। भारत में साँप के काटने से होने वाली मौतों में इनका योगदान सबसे अधिक है।

कोबरा नाग

लक्षण: अंगों का भारीपन, आँख न खोल पाना, लकवा पक्षाघात, घाव के आस-पास सूजन, कमज़ोरी, निगलने में तकलीफ।

रसेल्स वाईपर (परान, कौडिया)

लक्षण: मसूड़ों, नाक व पेशाब में खून आना, एक से ज़्यादा अंगों का काम करना बंद होना उल्टी, पसीना आना, चक्कर आना, दर्द, सूजन आदि।

सॉ- स्केल्ड फुरसा

लक्षण: मसूड़ों व नाक से खून निकलना, चक्कर, पसीना आना, उल्टी, सूजन, अंगों की विफलता, रक्त का दबाव बढ़ना।

कौमन करेत

लक्षण: घाव के आस पास सूजन, अंगों का पक्षाघात, निगल. नें में तकलीफ, पेट में गंभीर दर्द, कमजोरी, अंगों का भारीपन, आँख न खोल पाना, साँस लेने में तकलीफ।

विषहीन साँप

भारत में मिलने वाले साँपों की प्रजातियों में से कुछ प्रजातियाँ ज़हरीली है और इनमें से कुछ ही प्रजातियों का ज़हर मनुष्य के लिए घातक है। ज़्यादातर साँप विषैले नहीं होते और मनुष्य को हानि नहीं पहुचाँते।

दोमुही (रेड सैन्ड बोआ)

अलंकृत साँप (कॉमन ट्रिंकेट)

डेढ़हा (चेकर्ड़ कील बैक)

धामन (रैट स्नेक)

इंडियन वुल्फ स्नेक

कॉमन कैट स्नेक

चित्ती (रसेल्स बोआ)

ग्रास स्नेक (ग्रीन कील बैक)

अजगर (इंडियन रॉक पायथन)

ग्रीन वाईन स्नेक (वाईन स्नेक)

एक जैसे दिखने वाले
विषैले साँप और विषहीन साँप

कौमन करेत

रसेल्स वाईपर
(परान, कौड़िया)

सॉ-स्केल्ड वाईपर
(फुरसा)

इंडियन वुल्फ स्नेक

अजगर
(इंडियन रॉक पायथन)

कॉमन
कैट-स्नेक

साँप के काटने से कैसे बचें?

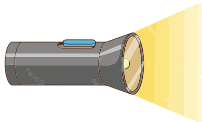

रात को टार्च का उपयोग करें तथा कदमों की आहट करके चलें ताकि साँप दूर सरक जाए।

पौधों को अपने दरवाज़े और खिड़कियों से दूर रखें।

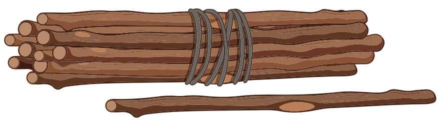

जंगल से लकड़ियाँ इकटठी करते समय सावधानी बरतें।

घर के कूड़े को घर से दूर फेंकें ताकि चूहे दूर रहें और उनके पीछे आने वाले साँप भी।

लकड़ी लेकर घास पर चलें, जिससे साँप मौजूद हो तो दूर चला जाए।

सम्भव हो सके तो ज़मीन पर न सोयें।

साँप के काटने पर क्या ना करें

विषैले साँपों द्वारा काटे जाने पर यदि उपचार न किया जाये तो लकवा, रक्तस्राव और गुर्दों की विफलता और बड़ी क्षति हो सकती है और यह स्थायी विकलांगता में साबित हो सकती है।

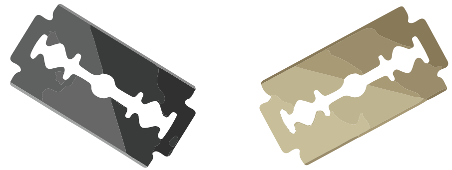

घाव या उसके आसपास चीरा ना लगायें।

इलेक्ट्रिक शॉक का इस्तेमाल ना करें।

घाव पर बर्फ ना लगायें।

कपड़े या पट्टी को कस के ना बाँधें।

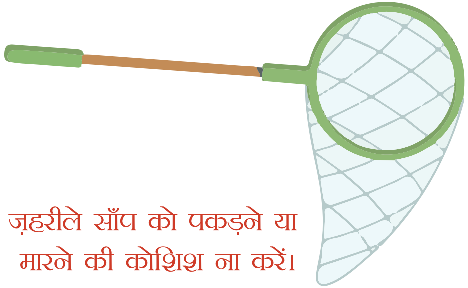

ज़हरीले साँप को पकड़ने या
मारने की कोशिश ना करें।

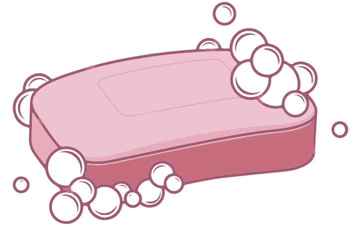

घाव को पानी या साबुन से ना धोयें

पीड़ित को कोई भी दवाई या दारु ना पिलायें।

घाव पर किसी भी तरह की
जड़ी-बूटी ना लगायें।

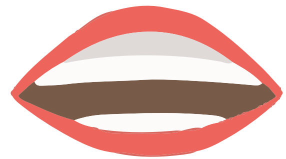

ज़हर को मूँह से चूसने की
कोशिश ना करें। मूँह के छालों से ज़हर
आपके शरीर में भी घुस सकता है।

साँप के काटने पर क्या करें?

पीड़ित को जल्द से जल्द नज़दीकी
अस्पताल में ले जायें जहाँ एन्टी-वेनम मौजूद हो।

पीड़ित को चलने फिरने से रोकें।

जूते, अँगूठी, गहने या तंग कपड़े अगर
घाव के पास हो तो उन्हें निकाल दें।

शाँन्त रहें, उत्तेजित होने से रक्त का
दबाव बढ़ता है, जिससे ज़हर तेज़ी से फैलता है।

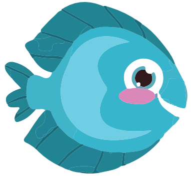

साँप का आहार

साँप मांसाहारी होते हैं। उनके आहार में विभिन्न प्रकार के जीव शामिल होते हैं जैसे कि **चूहे, गिलहरियाँ, पक्षी, मेंढक, मछ्ली और दूसरे साँप।**

अलग-अलग प्रजातियों में खाद्य प्राथमिकता उनके आवास में शिकार की उपस्थिति के कारण अलग-अलग होती है।

किंग कोबरा के आहार में ज़्यादातर दूसरे साँप आते हैं।

साँप को लेकर भ्रम और तथ्य

भ्रम 1 - साँप दूध पीतें हैं।

तथ्य: साँप दूध नही पीते। सपेरे के द्वारा कई दिनों तक प्यासा रखने की वजह से न चाहते हुए भी दूध पी लेते हैं।

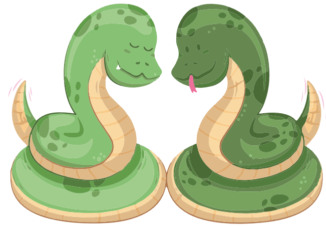

भ्रम 2 - साँप हमेशा जोड़े में घूमते हैं।

तथ्य: सिर्फ प्रजनन काल के दौरान दो साँप साथ पाए जाते हैं।

भ्रम 3 -एक साँप को मारने से दूसरा साँप बदला लेता है।

तथ्य: साँपों की प्रजाति में कोई भी सामाजिक लगाव नहीं होता और उनमें इंसानों की तरह याद रखने और पहचानने की क्षमता नहीं होती।

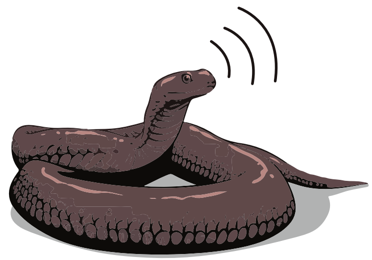

भ्रम 4 - साँप सुन नहीं सकते।

तथ्य: हाँलाकि साँप में कान के परदे का अभाव है, लेकिन उनके भीतरी कान की मदद से कंपन तथा कम आवृत्ति वाली आवाजें सुन सकते हैं।

साँपों का महत्व

कृषि, शहरी विकास, पालतू जानवरों के कारण कुछ साँप प्रजातियों की संख्या में कमी आयी है। मनुष्यों समेत पृथ्वी पर सभी प्रकार के जीवन के लिए जैवविविधता का एक उच्च स्तर बनाए रखना महत्वपूर्ण है और साँप उस जैवविविधता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

साँप प्रकृति के संतुलन में एक प्रमुख घटक है। उनकी उपस्थिति या किसी क्षेत्र से हटने से पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य पर सीधे प्रभाव पड़ता है। साँप चूहों को मारते है, जो खेत के उत्पादों को खाते हैं और फसलों को नष्ट करते है। वे फसलों को हानि पहुँचाने वाले कीड़ों को भी खाते हैं। साँपों के बिना, अधिकांश फसलें चूहों और कीड़ों द्वारा बर्बाद हो जाती है।

“ साँप के काटने पर समय ना गवायें, जल्द से जल्द नज़दीकी चिकित्सालय में जाँच कराऐं।

बहुत सारे साँप करैत जैसे दिखते हैं, परन्तु विषैले नहीं होते।
जैसे कि ये वुल्फ स्नेक।

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India